Dr. Kartik Kumar
Assist Prof (Guest)
Deptt of Psychology, S.R.A.P. College, Bararchakia
(A constituent unit of B.R.A. Bihar University, MZP)

Subject - Psychology
Topic - Dynamic concept of Mind.
Class - B.A PART I (II second Paper)
Day Thursday.
Date 17/02/2022
Period - 2nd
Contact No - 9801466117, 6202215708

Q. State and explain Freud's Dynamic concept of Mind.

मन के गत्यात्मक पहलू की विवेचना करें।

अथवा - OR

"आदत एक ऐसा मानसिक है जिसे विपरीत दिशा के आधार के दो अवयवों को एक साथ निश्चय में रखना पड़ता है" व्याख्या करें?

उत्तर :- किसी भी विज्ञान को समझने के दो तरीके होते हैं।

1- आधारात्मक - Theoretical aspect
2- Dynamic aspects - गत्यात्मक पहलू।

असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत अचेतन को जानने के लिए सर्वप्रथम हमें मन को जानना व समझना आवश्यक लगता है। मन आधारात्मक स्वरूप के अन्तर्गत चेतन और अचेतन आते हैं। मन के गत्यात्मक स्वरूप के अन्तर्गत ID, Ego, Super ego. आते हैं। जो फ्रायड द्वारा प्रतिपादित है। इसके परिप्रेक्ष्य में फ्रायड का कहना है कि :-

इड-(ID) :- मन के इस रूप में समस्त इच्छाओं का जन्मदाता कहा जाता है। इसे वास्तविकता से कोई मतलब नहीं रहता है। इस अवस्था में इच्छाएँ प्राथमिक रूप में रहती हैं। इन इच्छाओं की पूर्ति जब व्यक्ति को होता है तब उसे प्रसन्नता होती है। यह अवस्था व्यक्ति के उन शक्तियों का आधार है। जो जन्म लेते ही साथ हो जाते हैं। मनोवैज्ञानिक इन्हीं आवेगों को प्राथमिक रूप मानते हैं। तथा जीव वैज्ञानिक जीव तथा उनके जनकों

Ajanta PRODUCTS Officer

की प्रक्रिया मानते हैं। लेकिन फ्रायड ने इन्हें आदिम इच्छाओं का मूल स्थान माना है।

ईड (id) में विचार नहीं, क्रिया की शक्ति होती है। इस शक्ति का उपयोग मौलिक इच्छाओं की संतुष्टि के लिए होता है। यह संतुष्टि प्रक्षेप Reflex क्रियाओं और इच्छापूर्ति द्वारा होती है। प्रथम क्रिया में शक्ति उपयोग - प्रवृत्तिमूलक विषय की प्रतिछाया उत्पन्न करने के लिए होती है। दोनों प्रतिक्रियाओं का उद्देश्य व्यक्ति में प्रवृत्तिमूलक शक्ति का विनाश करना है।

वस्तु स्वभाव से ईड की शक्ति का स्थान बहुत ही गतिशील होता है। शक्ति की गतिशीलता को हम Displacement कहते हैं। ईड की शक्ति प्रेरणा या विचलित होता है, क्योंकि वस्तुओं में पहचान की शक्ति का पूर्ण अभाव होता है। जब ईड की प्रवृत्तियों की शक्ति के प्रवाह के उपयुक्त मार्ग नहीं मिलता तब वह ईगो अथवा सुपर ईगो द्वारा पराजित हो जाता है।

ईगो - ईगो :- फ्रायड के अनुसार ईगो मन की दूसरी शक्ति है। मन का यह भाग चेतन और प्राक्तिशील होता है। इसकी क्रियाएँ परिस्थितियों के अध्ययन के बाद होती हैं। यह चेतन समाज की रीति रीवाज, धर्म, कानून का पालन और सम्मान करता है। इसमें विचार, प्रवृत्ति, शक्ति, आदर्श और स्थायी भावों का समावेश होता है। हमारे सामान्य जीवन में इसका बहुत महत्व होता है। फ्रायड ने इसे चेतना बुद्धि की संज्ञा दी है।

महत्व की बात यह है कि ईगो की सीधे अपनी शक्ति नहीं होती है। ईगो की स्थापना तब तक नहीं होती है, जब तक मानसिक शक्ति ईड, ईगो की रचना करने वाली कुछ क्रियाओं में न चली जाए। इन क्रियाओं (सूझ, स्मृति, निर्णय) को जो मन तक जन्मजात रूप से पड़ी थी या सूझ की शक्ति प्रधान से ईगो का आरम्भ एक प्रकार से दीर्घ और जटिल विकास के रूप में होता है। इन गुप्त शक्तियों को क्रियाशीलता का उद्गम स्थल कहा जाता है जिसे तादात्म्य (Identification) कहते हैं